Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of - Psychology
D.B. college Jaynagar

Study Material
B.A. Part-I (Gen./Sub)
Date:- 12-11-2020
Lecture NO. 18

Perceptual organisation

प्रत्यक्षनात्मक संगठन के नियम (Laws of perceptual organisation):- वर्दाइमर, कोहलर, तथा कौफका के अनुसार उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण संगठित रूप में होता है। जबकि उसके अनेक अवयवों का का प्रत्यक्षीकरण हमेशा सरलता और सुन्दरता की ओर अनुभव होता है। इसे प्रैगनाज का नियम (Law of Pragnaz) कहते हैं। इस नियम के अनुसार प्रत्यक्षीकरण में हमेशा नियमितता, सरलता एवं एकता पायी जाती है, (Pragnaz-law states that perception will be as simple, whole and as goods as possible). प्रैगनाज कुछ नियमों पर आधारित होता है। यह नियम दो प्रकार के है:- (A) परीधीय नियम (Peripheral Principle) तथा (B) केन्द्रिय नियम (central principle)

A. परिधिय नियम (peripheral principle):- परिधिय नियमों में उन नियमों को रखा जाता है, जो की उद्दीपक से संबंधित होते है। उद्दीपक से संबंधित सभी नियम जन्मजात (Inborn) होते हैं न की अर्जित किए जाते हैं। यह नियम इस प्रकार है।

(1) समीपता का नियम (Principle of Proximity or Nearness):- इस नियम के अनुसार जो उद्दीपक दूसरे उद्दीपक से समय या स्थान में नजदीक होते हैं, उन्हें व्यक्ति आपस में संगठित कर

प्रत्यक्षीकरण करता है और उन्हे एक स्पष्ट आकृति के रूप में देखता है। जैसा की निम्न चित्र में दिखाया गया है कि कुछ बिन्दु एक पास पास होने के कारण पंक्ति (Row) में दिखायी देती है।

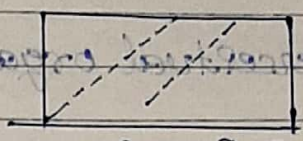

समीपता का नियम

(ii) समानता का नियम (Principle of Similarity):-

इस नियम के अनुसार जो उद्दीपक एक दूसरे के समान होते हैं, उनका व्यक्ति एक साथ संगठित रूप से प्रत्यक्षीकरण करता है जैसा की निम्न चित्र में कॉस तथा वर्गी संगठित होकर कॉलम (column) का प्रत्यक्षी करण कर रहे हैं।

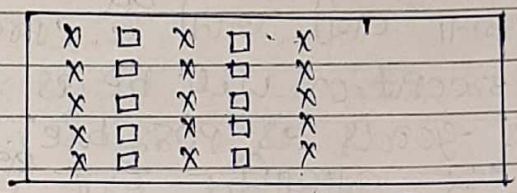

समानता का नियम

(iii) समभितता का नियम (Principle of Symmetry)

:- इसे उत्तम आकृति (Good Figure) नियम भी कहा जाता है। इस नियम के अनुसार जो उद्दीपक अधिक सुडौल या समभित होता है व्यक्ति उसे एक आकृति के रूप में देखता है। जबकि भिन उद्दीपकों में समभिति नहीं होती है उसे व्यक्ति एक स्पष्ट आकृति में संगठित नहीं देख पाता।

(iv) निरंतरता का नियम:- (Principle of continuation):- इस नियम के अनुसार जिन उद्दीपकों में या उद्दीपकों के आशा में एक ही दिशा में आने या जाने की

निरंतरता का नियम

निरन्तरता पायी जाती है, उन्हे व्यक्ति एक समूह में संगठित कर प्रत्यक्षीकरण करता है जैसा कि निम्न चित्र में प्रदर्शित।

(v) सामान्य गति का नियम (Law of common Fate):- अन्य बातों के समान होने पर जब दृष्टि क्षेत्र के उद्दीपक एक साथ एक दिशा में एक वेग से गतिशील होते हैं, तो उनका प्रत्यक्षीकरण संगठित रूप में होता है। सामान्य गति के कारण ही वह संगठित हो जाते हैं। जैसे - शान्त गिरगिट झाड़ियों में गतिशील होने पर ही प्रत्यक्षीकृत होता है।

(vi) पूर्ति का नियम (Law of closure):- इस नियम के अनुसार

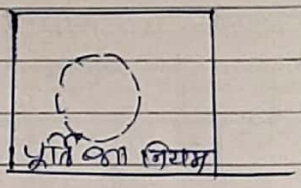

End.

Scanned with CamScanner